(1)

B.A. History Hon's, Part-I

Paper: I, Unit - I, Date: 25.11.2020 Lecture No.: 24

Lession: हड़प्पा संस्कृति सभ्यता

प्रस्तुत अध्ययन में हमने हड़प्पा संस्कृति के इतिहास का विस्तार से बताया है। यह सिन्धु घाटी सभ्यता का ही एक हिस्सा है। उसका विस्तार कैसे हुआ, उसकी नगर योजना कैसी थी, लोगों की अर्थव्यवस्था, पहनावे, कला, पूजा लिपि, धर्म, के विषय में पूरी जानकारी मिलती है। हड़प्पा संस्कृति भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो पंजाब के मोंटगोमरी जिले, पाकिस्तान में स्थित हैं। हड़प्पा संस्कृति वर्तमान शताब्दी के तीसरे दशक में मोहनजोदड़ो में आयोजित की गई थी। हड़प्पा का रहस्य बहुत ही अनोखा है।

सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा मोहनजोदड़ो)

सिन्धु घाटी सभ्यता, सिन्धु नदी की घाटी का उल्लेख करती है। मोहनजोदड़ो सिन्धु घाटी क्षेत्र अत्यन्त व्यापक था। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई करने से इस सभ्यता के प्रमाण मिले हैं। अतः इस तरह विद्वानों ने इसे सिन्धु घाटी की सभ्यता का नाम दिया, क्योंकि यह क्षेत्र सिन्धु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में आते हैं। पर बाद में रोपड़, लोथल, कालीबंगा, बनमाली, रंगपुर आदि क्षेत्रों में भी इस सभ्यता के अवशेष मिले जो सिन्धु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र से बाहर थे। सिन्धु सभ्यता दुनिया की सबसे पुरानी संस्कृतियों में से एक थी।

हड़प्पा संस्कृति का विस्तार:

हड़प्पा संस्कृति एक नगरीय संगठन था, जहाँ कुछ पिन्हों के दौरान सात मिन्नता पायी गई। मोहनजोदड़ो के विनाश के दौरान हड़प्पा संस्कृति ने मोहनजोदड़ो के शहर को पुनर्निर्माण किया। उस समय हड़प्पा सभ्यता शहरी जीवन की प्रगति पर आधारित थी।

हड़प्पा संस्कृति की नगर योजना: हड़प्पा के लोगों का जीवन बहुत ही सुखद और शांतिपूर्ण था। हड़प्पा समुदाय ग्रामीण इलाके में रहता था। वे लोग बहुत ही अच्छे विचारों के और मददगार लोग थे वे बिलकुल भी खतरनाक नहीं थे। जिन बड़े शहरों के घरों में लोग रहते थे वे घर पाँच फुट की लम्बाई और 7 फुट की चौड़ाई के हुआ करते थे। उनके भवनों में दो कमरे वाले घर होते थे। हड़प्पा संस्कृति के शहरों की सड़क के दोनों किनारों पर पंक्तियों में घर बनाए गए थे। अमीर लोग बड़े घरों में रहते थे, मुख्यरूप से गरीब लोग छोटे घरों और झोपड़ियों में रहते थे।

अनाज रखने का कोठार जो 45.71 मीटर लंबा और 15.23 मीटर चौड़ा हुआ करता था। हड़प्पा के दुर्ग में छः कोठार मिले हैं, जो ईंटों के चबूतरे पर दो पांतों में खड़े हैं। शहर में मंदिर बनाने के लिए कई ईंटों और मिट्टी का इस्तेमाल होता था। जल निकासी से बचने के लिए उन्होंने जलाशय बनाये और उसमें मिट्टी का उपयोग किया। बौद्ध धर्म के लोगों के लिए स्नानागार का निर्माण किया गया था, पूजा करने वाले कपड़े बदलने के लिए छोटे कमरे इस्तेमाल करते थे तथा इसके बाद देवी की पूजा करते थे।

सिन्धु घाटी सभ्यता में, जल निकासी प्रणाली बहुत व्यवस्थित क्रम में थी हर घर में नाली व्यवस्था का प्रयोग किया गया था।

लोगों की अर्थव्यवस्था: हड़प्पा संस्कृति की अर्थव्यवस्था व्यापार पर निर्भर करती थी। हड़प्पा की प्रगति का मुख्य कारण परिवहन व्यापार था। परिवहन प्रौद्योगिकी के प्रमुख आविष्कारों ने हड़प्पा के लोगों के लिए सहायता भी की थी।
वे व्यापार के लिए बैल-गाड़ियाँ और नाव का इस्तेमाल करते थे और यही परिवहन का मुख्य स्रोत था। बैल-चालित गाड़ियाँ दक्षिण एशिया की प्रधान थीं। वे नौकाओं और बैलगाड़ियों के उपयोग करके व्यापार करते थे। अधिकांश नौका छोटे और समतल तल की बनी थी, और नाविक के द्वारा संचालित होती थी, जिसको आज भी सिन्धु नदी पर देख सकते हैं।

हड़प्पा का पहनावा:

हड़प्पा के लोग कॉटन और ऊन से बने कपड़ों की पोशाक पहनते थे। ज्यादातर लोगों को इन कपड़ों के बारे में पता नहीं था। वे लोग कपड़े के दो अलग-अलग हिस्सों का इस्तेमाल करते थे, जो शरीर के ऊपरी और निचले हिस्से को ढकने में मदद करता था। उस समय आदमी दाढ़ी रखते थे, लेकिन आम तौर पर उनकी मूंछ नहीं होती थी। महिलायें अपने बालों की लट को रिबन द्वारा बाँधती थीं वह अपने बालों को कपड़े से ढकना पसंद करती थी। उस समय पुरुष और महिलायें दोनों गहने पहनना पसंद करते थे।

हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषता और कला:

हड़प्पा सभ्यता के लोगों में कला को पहचानने की योग्यता थी। वे लोग विभिन्न प्रकार के पुताई और चमकने वाले मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल किया करते थे। वे कई प्रकार के समान को रंग लेते थे यहाँ तक कि वे गाय, भेड़, बंदर, हाथी, भैंस, सुअर आदि जानवरों को भी रंग दिया करते थे। मोहनजोदड़ो के खंडहर में बड़ी संख्या में चाँदी, तांबा और कांस्य, कंघी और सुई, दर्पण, विभिन्न हथियारों से बने कई समान और बर्तन पाए गए।

हड़प्पा सभ्यता की लिपि:

हड़प्पा लोगों के लेखन सिरेमिक बर्तनों की मुहरों पर और शिला लेख पर पाए गए थे और लम्बाई में 4 से 5 अक्षरों से अधिक नहीं थे। जिसमें सबसे लंबा अक्षर 26 था। सिन्धु घाटी सभ्यता एक और तरीके से रहस्यमय थी।

हड़प्पा संस्कृति घरेलू जानवर: घरेलू पशुओं जैसे गाय, सुअर, भैंस, कुत्ते और मेमने को विद्वानों के लेखन में संदर्भ किया गया है।

हड़प्पा संस्कृति के लोगों का भोजन: धान की खोज में हड़प्पा मुख्य रूप से कृषि का स्थान था। हड़प्पा लोगों का मुख्य भोजन मुख्यतः गेहूँ, जौ और बादाम था।

हड़प्पा सभ्यता का धर्म:

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में कोई मंदिर और देवता की छवि नहीं थी। हड़प्पा और सिन्धु लोग अपने स्थान को लेकर बहुत ही धार्मिक थे। वे माँ को पूजते थे जिसमें शिव पशुपति प्रख्यात थे। वे "लिंग" और वृक्ष, सांप, पशु आदि की पूजा करते थे।

हड़प्पा संस्कृति के लोगों के गहने: हड़प्पा और सिन्धु के गहने सोने और अन्य धातुओं द्वारा बनाए गये थे। महिलाएँ सोने के गहनों का इस्तेमाल उस पत्थर के टुकड़े के साथ करती थीं जिस प्रकार के रंग के वे वह कपड़े पहनती थीं।

□ डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर